‘बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी’ में आदिवासी चिन्तन

डॉ. शिवकुमार हडपद
सेंट जोसेफ्स कालेज,
मैसूर
Email:shivkumarcs1985@gmail.com
Ph no : 9964615907

डॉ. शिवकुमार हडपद,बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी’ में आदिवासी चिन्तन, आखर हिंदी पत्रिका,
खंड 1/अंक 1/सितंबर 2021,(51-62)

आज़ादी के पश्चात् प्रकाश में आए अस्तित्ववादी विमर्शों में दलित विमर्श एवं स्त्री विमर्श के बाद सबसे नया विमर्श आदिवासी विमर्श है। अब आदिवासी चेतना से युक्त आदिवासी साहित्य हिंदी साहित्य पटल पर अपनी उपस्थिति दर्ज करा चुका है। आज आदिवासी साहित्य हिंदी के अलावा लगभग 100 आदिवासी भाषाओं में प्रचुर मात्रा में लिखा जा रहा है। दशकों के संघर्ष और प्रतिरोध के पश्चात् आज आदिवासी साहित्य को स्वायत्त विषय के रूप में केन्द्रीय परिधि में लाया जा रहा है। आदिवासी समाज व साहित्य पर निरंतर चर्चा की जा रही है। किन्तु आदिवासी समाज की तरह आदिवासी साहित्य का संघर्ष आज भी जारी है।

समकालीन आदिवासी लेखन और विमर्श की शुरूआत हमें 1991 के बाद से माननी चाहिए। भारत सरकार की नई आर्थिक नीतियों ने आदिवासी शोषण-उत्पीड़न की प्रक्रिया तेज़ की, इसलिए उसका प्रतिरोध भी मुखर हुआ। शोषणऔर उसके प्रतिरोध का स्वरूप राष्ट्रीय था, इसलिए प्रतिरोध से निकली रचनात्मक ऊर्जा का स्वरूप भी राष्ट्रीय था। निष्कर्षतः 1991 के बाद आर्थिक उदारीकरण की नीतियों से तेज़ हुई आदिवासी शोषण की प्रक्रिया के प्रतिरोध स्वरूप आदिवासी अस्मिता और अस्तित्व की रक्षा के लिए राष्ट्रीय स्तर पर पैदा हुई रचनात्मक ऊर्जा आदिवासी साहित्य है। इसमें आदिवासी और गैर-आदिवासी रचनाकार बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहे है।

आदिवासी साहित्यिक विमर्श के प्रतिमान – आदिवासी साहित्य कौन लिख सकता है? इस सवाल के जवाब में वाहरू सोनवणे गैर-आदिवासियों द्वारा रचे गए साहित्य को एकसिरे से नकारते है। “गैर-आदिवासियों ने भी आदिवासियों पर साहित्य रचा है लेकिन आदिवासी समाज को जोरदार प्रोत्साहन

देने की बजाय इनका अपना अलग-अलग उद्देश्य भी रहा है। जैसे कुछ लेखकों ने आदिवासी आंदोलन को आगे बढ़ाने की कोशिश में शोध किया है, तो कुछ साहित्यकारों ने केवल पैसा हथियाने के लिए साहित्य लिखा, तो कुछ साहित्यकारों ने अपने समाधान के लिए साहित्य रचना की। गैर आदिवासी होने के नाते इनके साहित्य में आदिवासी समाज का अपने जीवन में होने वाला तान-तनाव, भाव-भावनाएँ, मानसिक संघर्ष, आनंद, मोह को समुचित न्याय मिलना संभव नहीं है"। (1) वाहरू सोनवणे के इस मंतव्य का समर्थन डॉ.राजेन्द्र ठाकरे, महादेव टोप्पो सहित कई प्रतिभाशाली आदिवासी लेखकों के जमात करते है।

गैर आदिवासीयों द्वारा आदिवासी समुदाय के प्रति रोमानी व भावुक दृष्टिकोण ही आदिवासी के सच को मार्मिक पूर्ण नहीं बना पाता। साथ ही परिवेशगत दूरी इस खाई को और भी चौड़ी बना देती है जिसका विश्लेषण करते हुए महादेव टोप्पो लिखते है-"सभ्य या शिष्ट कहा जानेवाला साहित्य आदिवासी जीवन एवं उसकी समस्याओं को अंतरंगता एवं आत्मीयता से देख नहीं पाता क्योंकि वह उनके परिवेश से परिचित नहीं होता। अतः स्वाभाविक ही है वह कई प्रकार के पूर्वाग्रहों से ग्रसित होकर आदिवासी समाज को देखता और चित्रित करता है"। (2) इस प्रकार कहा जा सकता है कि आदिवासी साहित्य का लेखन प्रभावपूर्ण व तार्किक आदिवासी साहित्यकारों द्वारा ही संभव हो सकता है। आदिवासीयों की यातना व वेदना अन्य समुदायों से नितांत भिन्न होने के कारण गैर-आदिवासीयों की रचना महज सतही विश्लेषण या दूर सेकिया गया निरीक्षण मात्र हो सकता है।

प्राथमिक रूप में आदिवासी साहित्य पहचान के सवाल से जुड़ा है, अतः केवल आदिवासी ही सच्चा आदिवासी साहित्य लिख सकते है, इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता है। किन्तु आदिवासी साहित्य लेखन के अंतर्गत गैर आदिवासीयों को भी शामिल करने की पहल कतिपय आदिवासी आलोचकों, कवियो व लेखकों में से करते है। हरिराम मीणा जी स्वानुभूति और सहानुभूति के विमर्श को किसी विषय को लेकर किये जाने सृजन का पक्का मापदंड नहीं मानते है। उनका मानना है कि ' कोई कहीं से भी आये लेकिन जिस विषय पर उसे लिखना है, उसकी गहरी जानकारी और विषय के प्रति समर्पण-भाव तो अनिवार्य होना ही चाहिए। इसके अभाव में बात प्रभावकारी नहीं बन पायेगी। हरिराम मीणा जी का यह तर्क महाश्वेता देवी द्वारा रचे गए आदिवासीयों के जीवन पर सशक्त कृतियों के बरबस है। महाश्वेता देवी फील्ड में सक्रिय रही है, तभी 'जंगल के दावेदार' व 'चोटीमुण्डा व उसके तीर' जैसे उपन्यास हमारे सामने आये, जिनमें आदिवासी जीवन के संघर्ष की वास्तविक झाँकी दिखाई देती है। वस्तुतः यहाँ सहानुभूति स्वतः ही स्वानुभूति बन जाती है।

किन्तु फील्ड में रहकर किया गया अनुभव जीवन की प्रामाणिकता को शिद्दत से पेशकरने में असमर्थ ही साबित होती है। दूस से किया गया अनुभव जो कि स्वयं के जीवन से जुड़ा हुआ नहीं हो कभी भी स्वानुभूति के समकक्ष नहीं हो सकती। महाश्वेता देवी का आदिवासी लेखन के संबंध में हरिराम मीणा की पक्षधरता कही-न-कही उनकी सीमाओं को स्पष्ट संकेत देता है। किन्तु इसके बावजूद आदिवासी साहित्य लेखन को लेकर दलित साहित्य लेखन की तरह पूर्वग्रह नहीं है क्योंकि आदिवासी लेखन व विमर्श को केन्द्र में लाने का श्रेय गैर-आदिवासी को ही जाता है। साथ ही आदिवासी जीवन पर कई उत्कृष्ट रचनाएँ गैर आदिवासीयों द्वारा रची गई है।

आदिवासी लेखन विविधताओं से भरा हुआ है। मौखिक साहित्य की समृद्ध परंपरा का लैभ आदिवासी रचनाकारों को मिला है। आदिवासी साहित्य की उस तरह कोई केन्द्रीय विधा नहीं है, जिस तरह स्त्री साहित्य और दलित साहित्य की आत्मकथात्मक लेखन है। कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक सभी प्रमुख विधाओं में आदिवासी और गैर-आदिवासी रचनाकारों ने आदिवासी जीवन समाज की प्रस्तुति की है। आदिवासी रचनाकारों ने आदिवासी अस्मिता और अस्तित्व के संघर्ष में कविता को अपनी मुख्य हथियार बनाया है। आदिवासी लेखन में आत्मकथात्मक लेखन केन्द्रीय स्थान नहीं बना सका, क्योंकि स्वयं आदिवासी समाज 'आत्म से अधिक समूह में विश्वास करता है' अधिकांश आदिवासी समुदायों में काफी बाद तक भी जी और निजता की धारणाएँ घर नहीं कर पाई। परंपरा, संस्कृति, इतिहास से लेकर शोषण और उसका प्रतिरोध-सब कुछ सामूहिक है। समूह की बात आत्मकथा में नहीं, जनकविता में ज्यादा अच्छे से व्यक्त हो सकती है।

नयी सदी के आदिवासी युवा कवियों में अनुज लुगुन के नाम बड़े ही आदर से लिया जाता है। उनकी कविता संग्रह 'बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी' में कवि आदिवासीयों के जीवन का वास्तविक चित्रण खींचा है।

इस कविता संग्रह के तीन भाग है। पहला-बाघ, दूसरा-सुगना मुण्डा और तीसरा-सुगना मुण्डा की बेटी। इन तीनों भागों में कवि ने आदिवासीयों की अस्मिता के संबंध में अपने विचार व्यक्त किया है।जहाँ तक मैंने इस लम्बी कविता को समझने का प्रयास किया है, उसे निम्नलिखित शीर्षकों के द्वारा विश्लेषित करने का प्रयत्न किया है-

1.बाघ का अस्तित्व- कवि ने अपने कविता संग्रह में बाघ के अस्तित्व को स्वीकार किया है। यहाँ बाघ का अर्थ वह जंगली जानवर नहीं जो जंगल में रहता है, यहाँ बाघ का अर्थ है-व्यवस्था, शहरीकरण,

भूमंडलीकरण, सभ्य लोग अर्थात सवर्ण आदि। यहाँ बाघ उन लोगों के प्रतीक बनकर आया है, जो आदिवासियों के अस्तित्व के लिए संकट बने है। इसीलिए कवि कहता है कि-

जहाँ से वह छलाँग लगाता है
वहाँ के लोगों को लगता है
उसके खिलाफ खड़े लोग
असभ्य जंगली और हत्यारे हैं
सभ्यता की उद्घोषणा के साथ
वे पतिरोध पर खड़े लोगों पर बौद्धिक हमले करते हैं
उनकी भाषा को पिछड़ा हुआ और
इतिहास को दानवों की दावत मानते है
उनके एक हाथ में दया का सुनहला कटोरा होता है
तो दूसरे हाथ में खून से लथपथ कूटनीतिक खंजर।

कवि का कहना है कि बाघ जहाँ पर छलांग लगाता है, अर्थात जहाँ पर वैश्वीकरण अपना अधिपत्य स्थापित करना चाहता है, वहाँ उसके विरोध में जो लोग खड़े है आदिवासियों को असभ्य, जंगली और हत्यारे माना जाता है। सभ्य समाज के लोग सभ्यता की घोषणा करते हुए आदिवासियों पर बौद्धिक हमले करते है। वे मानते है कि आदिवासियों की भाषा पिछड़ा हुआ है और नका इतिहास दावों का इतिहास है। सभ्य लोगों के एक हाथ में दया का कटोरा है, तो दूसरे हाथ में कूटनीति का खंजर। अर्थात कवि का मानना है कि सभ्य लोग आदिवासियों की सहायता करने की आड में उनके अस्तित्व को ही मिटा देने की साजिश रच रहे है।

कविता संग्रह की भूमिका में रविकृष्ण जी बाघ के संबंध में लिखते है कि-"इस सर्वमान्य धारणा का कि बाघ का स्थायी वास जंगल है, इस कविता में खंडन है। पहाड़ के एक ओर जंगल है और दूसरी ओर राजधानी है, जहाँ बाघ है राजधानी में विधानसभा है, विधायक है, मंत्री है, सत्ता पक्ष और विपक्ष है, धनी, सम्भ्रान्त शिक्षित जन है। यह बाघ भूमण्डलीकरण के बाद का है, जिसके हमले ने समूची पृथ्वी को दो हिस्सों में बाँट दिया है। बाघ का रूप बदल चुका है। कविता में बाहर के बाघ से कही अधिक भीतर के बाघ की पहचान पर कवि का ध्यान है"।

2.जंगल का महत्व – आदिवासी और जंगल के बीच गहरा संबंध रहा है। जंगलों के कारण ही आदिवासियों का अस्तित्व है। आदिवासियों की संस्कृति, सभ्यता, परंपरा, आचार-विचार सबकुछ जंगल से जुड़ा हुआ है। लेकिन नयी सदी में इन्हीं जंगलों को विकास के नाम पर काटा जा रहा है। जिससे आदिवासियों का अस्तित्व खतरें में पड़ गया है। सुगना मुण्डा अपनी बेटी बिरसी से कहता है कि-

बिरसी आज भी जंगल हमारा पूर्वज है
और हम जंगल के पूर्वज हैं
हमारे पूर्वजों से विच्छेद करा कर
हमारे अस्तित्व की रीढ़ तोड़ी जा रही है
हमे अपने पूर्वजों की सहजीविता से जबरन दूर रखकर
हमारे अन्दर वर्चस्वकारी संस्कार, आरोपित किये जा रहे है
कि हम एक ही दिखें, एक ही रंग में रँगे
हम भी सभ्यता के भ्रम में करने लगे है
बेटियों की पहचान बेटों से अलग।

इन पंक्तियों से स्पष्ट होता है कि सुगना मुण्डा अपनी बेटी को यह अवगत कराता है कि किस प्रकार उन्हें उनके पूर्वज अर्थात जंगलों से अलग करने की साजिश हो रही है। वह यह भी समझाता है कि उनको किस तरह से सभ्यता के भ्रम जाल में फसाया जा रहा है।

3.मातृसत्ता का समर्थन –सुगना मुण्डा की बेटी बिरसी निश्चय करती है कि वह अकेली मर्दों की दुनिया में कदम रखकर आदिवासी अस्मिता के लिए लड़ेगी। लेकिन रीडा उसे यह कहकर रोकता है कि- "तुम मर्दों की दुनिया में एक लड़की का नेतृत्व आदिवासी संघर्ष को कहाँ तक ले जा सकती है। उसे सुनकर बिरसी चौंकते हुए कहती है कि-

यह क्या कह रहे है?
हमसुगना मुण्डा की बेटियाँ हैं
उनके बेटों के सामने बेटियाँ नहीं
उनके बेटों की संगी बेटियाँ
और आप यह.....

बिरसी का कहना है कि सुगना मुण्डा की बेटियाँ उनके बेटों के विरूद्ध नहीं खड़े हैं बल्कि उनके बेटों के साथ खडे हैं। फिर भी रीड़ा समझाता है कि-

तुम सही हो बिरसी
लैंगिक भेद पर
तुम्हारा यह आवेश
हमारी मातृसत्ता का ही अवशेष है
हॉ लेकिन यह अवशेष है
जो हर बार हर तरफ से छीला जा रहा है
नोच नोच कर निगला जा रहा है इस
जनहित के लिए उठाये गये तुम्हारे कदम पर

सबसे पहले तुम्हारे लोगों के बीच से ही उँगली उठेगी
बिरसी.....!!!!

इन पंक्तियों से हमें पता चलता है कि रीड़ा अपना दुःख व्यक्त करते हुए कहता है कि आज हम से हमारी मातृसत्ता को छीना जा रहा है। नोच नोच कर उसे निगला जा रहा है। उसका कहना है कि जनहित के लिए उठाये गये तुम्हारे कदम का विरोध सबसे पहले तुम्हारे ही लोग करेंगे। अर्थात आदिवासी ही मातृसत्ता का विरोध करेंगे।

4.पितृ सत्ता का विरोध– जिस तरह से रीडा और बिरसी मातृ सत्ता का समर्थन करते है, उसी तरह पितृसत्ता का विरोध भी करते है। उन्हें पता लगता है कि आदिवासी सभ्यता में अब पितृसत्ता के विषाणु फैल रहे है। रीड़ा बिरसी को समझाता है कि –

तुमने देखा है
अपने ही भाइयों को
जो हाट में आते है दिकु से बतियाते है
वह दिकु उनसे कहता है कि
'कैसे भाई हो जो

तुम अपने बहनों को
वश में कर नहीं सकते
कैसे पति हो
जो पत्नी को सरेआम हँसने पर मना नहीं करते'

सबके सब मर्द-जनाना

एक साथ बतियाते-गपियाते है

नीचता है यह असभ्यता है यह
और तुम्हारे ही भाई
अब तुम्हें देखने लगे है बिटियों की तरह
पितृसत्ता के विषाणु फैल रहे हैं
हमारे अन्दर यहाँ से वहाँ तक
संस्थापगत और नीतिगत रूपों में,

5.सत्ताओं का अस्तित्व –रीड़ा का मानना है कि जब तक आदिवासियों की दुनिया एक द्वीप की तरह थी, अर्थात सीमित थी तब तक उनमें समता की भावना थी। लेकिन जैसे जैसे उनकी संस्कृति पर बाहरी सभ्यता का आक्रमण हुआ तो उनमें भी पितृसत्ता, सामंती सत्ता, धर्म सत्ता और पूँजी सत्ता जैसे

अनेक सत्ताओं का आवर्भाव होने लगा, जिससे आदिवासी संस्कृति, सभ्यता सत्ताओं की लालसा में बँटने लगी। रीड़ा कहता है कि-

हाँ बिरसी !

जब तक हमारी दुनिया
एक द्वीप की तरह थी
तब तक समता थी
हमारे गीत-अखाड़े

सबके लिए बराबर थे
तुम्हारे लिए गिति:ओड़ा:था

धुमकुडिया था, पेल्लो एड्पा था, घोटुल था

लेकिन जब से हमारी दुनिया में
घुने लगी है सागर की बेखौफ लहरें
उसके सत्तात्मक विषाणु हमारे बीच फैलने लगे है
कहीं पितृसत्ता तो कहीं सामन्ती सत्ता
कही धर्म की सत्ता तो कहीं पूँजी की सत्ता है।

6.सहजीविता –'बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी' कविता संग्रह की एक महत्वपूर्ण परिकल्पना है – सहजीनिता। सहजीविता के बारे में कवि अनुज लुगुन कहते है कि "अपनी स्मृतियों और अनुभव के आधार पर मैं यह साफ कह सकता हूँ कि मनुष्यों की दो दुनिया रही हैं – एक उपनिवेश बनाने पर यकीन करनेवाली दुनिया और दूसरी सहजीवियों की दुनिया"। यह धरती केवल मनुष्यों की नहीं है। इस पर उन सभी जीव जंतुनओं का समान अधिकार है, जो इस धरती पर निवास करते है। लेकिन मनुष्य अपनी महात्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए धरती पर अपना एकाधिकारर स्थापित करने का प्रयत्न कर रहा है। इसीको ध्यान में रखते हुएरीडा समझाता है कि –

हाँ ये सवाल अब तक कथित सभ्य
और मानवीय लोगों के लिए विचारणीय नहींथे
उनके विचार के केन्द्र में नहीं थी रहजीविता
उनके लिए यह जीवन
मनुष्य केन्द्रति था
जबकि यह धरती केवल मनुष्यों की नहीं है।

रीडा का कहना है कि सभ्य और मानवीय लोगों के केन्द्र में केवल मनुष्य था सहजीविता नहीं, अर्थात वे लोग केवल मनुष्य को ही महत्व दिया न कि प्रकृति को। लेकिन यह धरती तो केवल मनुष्यों की नहीं है, इस पर सभी जीवियों का अधिकार है।

आगे कविता में डोडे वैद्य अपने शिष्यों को समझाता है कि –

सहजीविता की समझ ही ज्ञान
संवेदनाओं, अनुभूतियों की पहचान ही ज्ञान है
ज्ञान प्रतिस्पर्धा नहीं प्रेम सिखाता है
प्रकृति और मनुष्य
मनुष्य और प्रकृति की सहजीविता
समूह में संभव है
इसे सींचना पड़ता है
अब यह तुम सबका दायित्व है कि
इसका बीजरोपण आगामी पीढ़ी में करो।

डोडे वैद्य के अनुसार मनुष्य और प्रकृति दोनो सहयोग के साथ इस धरती पर रहे, यही सहजीविता है और यह सहजीविता ही ज्ञान है, जो प्रेम सिखाता है। यह सहजीविता समूह में संभव हो पाता है। इसीलिए डोडे वैद्य इस सहजीविता की जिम्मेदारी आवेवाली पीढ़ी पर छोड़ता है।

7.पर्यावरण चेतना –आदिवासी और प्रकृति के बीच अटूट संबंध रहा है। आदिवासी संस्कृति, सभ्याता परंपरा, रीति-रिवाज़ सभी का आधार प्रकृति ही है। इसीलिए आदिवासी प्रकृति को अधिक महत्व देते है। आधुनिक युग में पर्यावरण पर हो रहे शोषण से आदिवासी समुदाय अवगत है। इसीलिए डोडे वैद्य अपनी शिष्याओं को समझाता है कि –

हाँ मूल तो प्रकृति ही है
वर्तमान दम्भी विज्ञान का उत्स भी
सभी उत्पादित वस्तुओं का सोता भी
आह.....लेकिन उसी प्रकृति का आज इतना अपमान है !
जड़े, छाल, पत्ते, फल, पत्थर, बीज, लतर
सभी जीवन की औषधि है
प्रकृति अंगी है हम अंग है
उसकी रक्षा हमारा कर्तव्य
यही है आदिवासियत का आधार
और यही आधार है सम्पूर्ण सृष्टि के जीवन का।

इन पंक्तियों से ज्ञात होता है कि आदिवासी प्रकृति को कितना आदर, सम्मान देते है। वे समझते है कि प्रकृति का सम्मान करना उनका धर्म है, प्रकृति की रक्षा उनका कर्तव्य। वे मानते है कि संपूर्ण सृष्टि का आधार यही प्रकृति है। यही पर्यावरण चेतना आज नगरवासियों में पनपना आवश्यक हो गाय है, क्योंकि आज प्रकृति का अधिक दोहन नगरवासी ही कर रहे है।

8.स्त्री भ्रूण हत्या – भारत देश में यह मान्यता चली आ रही है कि बेटा, बेटी से श्रेष्ठ होता है, क्योंकि बेटे से वंश आगे बढ़ता है और अपनी संपत्ति के लिए उत्तरदायी होता है। भारतीय समाज में लड़की को अधिक महत्व नहीं दिया जाता,क्योंकि लड़की शारीरिक रूप से दुर्बल होने के साथ साथ लड़की के जन्म से परिवारवालों को अधिक खर्चा करना पड़ता है। इसीलिए बहुत लोग गर्भावस्था में ही बच्चे की जाँच कराते है। अगर पेट में स्त्री भ्रूण है तो, उसे मार दिया जाता है। यह एक अनागरीक कृत्य है, जो भारत देश में सदियों से चला आ रहा है। इसीका विरोध करते हुए कविता में दूसरी ध्यानस्थ कहती है कि –

मैं युवती की लाश पर झुकती हूँ,
उसे गोद में उठाता हूँ
लेकिन अरे यह क्या.....?
यह तो कोई समकालीन पत्रिका है?
उसके आवरण पृष्ठ पर
एक गर्भवती स्त्री की नंगी तस्वीर छपी है
जिसके गर्भ में दो भ्रूण हैं
एक में बच्चा है, दूसरे में बच्ची है
बच्चे के सिरहाने पर ताज़े फूल रखे हैं
और बच्ची के सिरहाने पर
सफेद कपडों से लिपटा एक ताबूत रखा है।

इस कविता में ध्यान देनेवाली बात यह है कि उस गर्भवती स्त्री की तस्वीर समकालीन पत्रिका में छपी है। अर्थात वह तस्वीर नयी सदी में भी बेटा और बेटी में किये जा रहे भेदभाव की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करती है।

9.दलित अस्मिता –प्रस्तुत कविता संग्रह में कवि ने आदिवासियों के साथ साथ दलित अस्मिता को भी चित्रित किया है। चौथे ध्यानस्थ आज्ञावाचक शब्द सुनता है कि –

शूद्र ! नीच !
तुम्हारी यह हिम्मत
कि तुम धर्म की नीतियों का उल्लंघन करोगे?
हम इस मन्दिर के पुजारी है
सदियों से वंशानुगत
हमारे पुरखे इसके पुजारी रहे हैं
और तुम कह रहे हो
कि यहाँ पहले तुम्हारा गाँव था?

पुजारी ने आदिवासियों को भी शूद्र मानता है और उससे कहता है कि तुम धर्म की नीतियों का उल्लंघन कर रहे हो। इस मन्दिर में हम पुरखों से सेवा करते आ रहे है। तुम कैसे कह सकते हो कि यहाँ पर तुम्हारा गाँव था?

पुजारी के उन अपमान भरक शब्दों को सुनकर चौथे ध्यानस्थ कहता है कि –

शूद्र !

कौन मुझे कहता है?

मैं भील हूँ, लड़ाकू योद्धा भील,

हमने आज तक किसी की गुलामी नहीं की है

सुनो ब्राह्मण पुजारी।

हम तुम्हारी वर्ण-व्यवस्था से बाहर है

देखो, मेरी मजबूत भुजाओं को

इन्हीं भुजाओं ने

तुम्हारे पुरूषोत्तम का उद्दार किया था

हमें कोल कहो, किरात कहो,

लेकिन शूद्र !

कोई किसे कैसे शूद्र कह सकता है?

तुम मुझे अपनी साजिश में फँसा नहीं सकते।

आदिवासी अपने आप को शूद्र नहीं मानते। वे अपने आप को भील अर्थात योद्धा मानते है। सवर्णियों के जाति रूपक फरेब के जाल में आदिवासी नहीं फसना चाहते है। उनको अपने कुल और जाति पर गर्व है।

10.विस्थापन की समस्या – नयी सदी में आर्थिक विकास के नाम पर जंगलों को काटकर बड़ी बड़ी इमारतें, कारखाने, सड़क, बाँद आदि बनाया जा रहा है। इससे जंगलों को ही अपने जीवन का आधार माननेवाले आदिवासियों के जीवन विस्थापित हो चुका है। विस्थापन के बाद आदिवासियों को जीवन गुज़ारने के लिए जो नयी व्यवस्था का जो प्रबंध किया जाता है उसमें भी अव्यवस्था होती है। इसीको लक्ष्य करके कवि कहता है कि –

उन पहाड़ी दरख्तों को देखो
जो अब तक भालुओं
और खरगोशों की ओट से पवित्र था
उन्हें विस्थापित करता हुआ
उसी ओट से

उसे अपवित्र करता हुआ
दाखिल हो चुका है
वह आदमखोर
हमारी सहजीवी दुनिया में।

कवि ने यहाँ पर आदमखोर उन लोगों को संबोधित किया है, जो आदिवासियों के सहजीवी दुनिया पर आक्रमण किया है। अर्थात सरकार के प्रतिनिधि, अधिकारियों, ऊँची जातिवाले, सभ्य लोग आदि लोगों को ही आदमखोर शब्द का प्रयोग किया है।

11.आदिवासी चेतना - कविता संग्रह के अंत में बिरसी और उसकी सभी साथियों में अपनी संस्कृति, सभ्यताऔर परंपराओं के प्रति जागृति पैदा होती है, अपने पूर्वजों के प्रति गर्व का अनुभव होता है। उन्हें अपने ऊपर हो रहे बाहरी आक्रमण का पता चलता है और अंत में अपनी संस्कृति और सभ्यता की रक्षा करने का प्रण लेते है।

ओ आदमखोर !

तुम्हारी सुरक्षा में साँप, बिच्छू
और घडियालों की फौज है
तुम्हारी वासनामयी आँखें दहक रही है
तुम्हारी जीभ लार टपका रही है
अपनी पैनी दाँत और पंजों के साथ
तुम हमारी ओर बढ़ रहे हो
लेकिन देखो !

हम तुम्हारे सामने निर्भय खड़े हैं।

अंत में बिरसी और उसके साथी अपने पूर्वजों को इस प्रकार पुकारते है-

अब कुछ भी अधूरा न हो
अधूरा न हो
अस्मिता और अस्तित्व का स्वर
अधूरी न हो जन-संस्कृति

अधूरा न हो जनपद
लड़ाई अधूरी न हो
जय हो ! जोहार हो ! जोहार हो !

निष्कर्ष – इस प्रकार कवि अनुज लुगुन जी ने अपनी 'बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी'कविता संग्रह के द्वारा आदिवासी अस्मिता को एक नई दिशा प्रदान की है। कवि ने अपनी कविताओं में आदिवासियों के उन सभी मुद्दों पर चर्चा किया है, जो नयी सदी में प्रासंगिक बने है। कवि ने कविता संग्रह

के तीनों भागों में आदिवासियों से संबंधित अनेक विचारों पर पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है। पहला भाग 'बाघ में आधुनिक युग में आदिवासी संस्कृति पर हो रहे बाहरी आक्रमणों को पहचानने की कोशिश की गयी है, तो दूसरे भाग 'सुगना मुण्डा' में आदिवासियों के पूर्वजों के संघर्षशीलता को प्रकाश में लाया गया है। तीसरे भाग 'सुगना मुण्डा की बेटी' में रीड़ा हडम, डोडे वैद्य और बिरसी तथा अन्य शिष्यों के बीच बदलते आदिवासी जीवन और अस्मिता की लड़ाई के लिए आगे की रणनीति बनाते हुए दिखाया गया है। पूरे कविता संग्रह में आदिवासी जीवन को समेटने का प्रयत्न किया गया है। नयी सदी में वैश्वीकरण आदिवासी अस्मिता के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती बनी हुई है। कविता संग्रह में वैश्वीकरण के कारण आदिवासी संस्कृति पर हो रहे बाहरी आक्रमण का विरोध किया गया है। साथ ही सहजीविता, पर्यावरण चेतना, दलित चेतना, आदिवासी चेतना, विस्थापन की समस्या जैसे प्रमुख मुद्दों पर विचार विमर्श किया गया है।साथ ही आदिवासी समाज में घुस रहे पितृसत्ता, सामन्ती सत्ता, धर्म सत्ता और पूँजी सत्ता के षड्यंत्रों के प्रति कवि ने सचेत भी किया है।

****